इकाई - 1

(अ) पल्लवन को स्पष्ट करते हुए पल्लवन की विशेषताओं को समझाइए। अथवा

निम्नलिखित में से किन्हीं दो का पल्लवन कीजिए :

(i) परहित सरिस धरम नहिं भाई। (ii) परिवर्तन प्रकृति का नियम है। अथवा

नगर के स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए जिसमें आपके मोहल्ले की सफाई के लिए अनुरोध हो ।

(ब) अनुवाद के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए एक अच्छे अनुवाद के गुणों पर प्रकाश डालिए। अथवा

निम्नलिखित पारिभाषित शब्दों में से किन्हीं सात के हिन्दी रूप लिखिए :

(i) Act	(ii) Cell	(iii) Computer
(iv) Agent	(v) Nebula	(vi) Tracer
(vii) Demonstrator	(viii) Basiscopic	

इकाई - 2

(अ) निम्नलिखित मुहावरों एवं कहावतों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(i) ऊँट के मुँह में जीरा।	(ii) ईद का चाँद होना।
(iii) अंधे की लकड़ी।	(iv) मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक।
(v) एक अनार सौ बीमार।	(vi) खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

(vii) अधजल गगरी छलकत जाय।

(ब) निम्नलिखित के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(i) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

(1) आँख (2) नदी (3) पक्षी (4) माता

(ii) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए:

(1) उत्कर्ष (2) पुण्य (3) स्वतंत्र (4) कृतज्ञ

(iii) निम्नलिखित शब्दों के अनेक अर्थ लिखिए:

(1) अर्थ (2) गुरु (3) कर्म (4) द्विज

(iv) समश्रुत शब्दों में अंतर स्पष्ट कीजिए:

(1) कुल	कूल	(2) अनिल	अनल
(3) चीर	चिर	(4) पास	पाश

(v) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए:

(क) दु:ख देने वाला। (ख) प्रतिदिन होने वाला।

(ग) जो नष्ट होने वाला है। (घ) वह जो दूर की बात देख सके।

a2zSubjects.com

a2zSubjects.com

इकाई - 3

a2zSubjects.com

'देवनागरी' नामकरण के संबंध में विद्वानों के मत प्रकट करते हुए संक्षेप में उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। अथवा

मानक भाषा की प्रमुख विशेषताओं का सविस्तार विवेचना कीजिए।

इकाई - 4

(अ) कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी की परिकल्पित धारणा क्या है ? विस्तार से समझाइए।

(ब) निम्नलिखित पदनामों में से किन्ही पाँच के हिन्दी रूप लिखिए :

(i) Engineer	(ii) Census Officer
(iii) Driver	(iv) Minister
(v) Hostess	(vi) Trustee
(vii) Incharge	(viii) Judge

इकाई - 5

(अ) संक्षेपण को परिभाषित करते हुए उसकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ब) निम्नलिखित गद्यांश का संक्षेपण कर उपयुक्त शीर्षक दीजिए :

मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण तभी होता है जब उसकी स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ एक लक्ष्य को दृष्टि में रखकर व्यवस्थित की जाती है। एक पूर्णतया नैतिक आदर्श के नेतृत्व में जब हम अपनी इच्छाओं को नियमित करते है तभी चरित्र का निर्माण होता है। यह नियम या संयम किसी न किसी लक्ष्य की साधना में ही सम्भव है। न केवल यह कि लक्ष्य के बिना संयम का कुछ अर्थ ही नही, बल्कि यह भी सच है कि संयम की प्रेरणा भी लक्ष्य प्राप्ति की इच्छा बिना नही मिलती।

माँझी को यदि नदी के किनारे पहुँचने की इच्छा न हो तो नौका को चलाने की प्रेरणा कौन देगा ? जो लोग संसार की लहरों पर खेलना ही जिन्दगी समझते है, वे कभी संयमित जीवन नही बिताते। दूसरे तट पर पहुँचने की इच्छा वाले ही संयम से अपनी जीवन-नौका को निश्चित दिशा की ओर खेते है। अनेक लहरों द्वारा खेतों को सींचने का लक्ष्य न हो तो नदी के बहते पानी को बाँधने की आवश्यकता ही नही होती। केवल मनोरंजन के लिए कोई पानी को नही बाँधता।

यदि बाँधे तो भी उस अवस्था में मनोरंजन का लक्ष्य होता है। सम्भव है कि मनुष्य के लक्ष्य का नैतिक मूल्य बहुत थोड़ा हो। यह भी मुमकिन है कि वह बिल्कुल स्वार्थपूर्ण एवं संकीर्ण हो। वह कैसा भी हो, नैतिक दृष्टि से वह भले ही निष्प्रयोजन और व्यर्थ हो, किन्तु हमारी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के लिए उसका मनोविज्ञानिक मूल्य तो बना ही रहेगा। यही लक्ष्य हमारी शक्तियों का, मन के संकल्पों और शरीर के प्रयत्नों को पथ-प्रदर्शन करेगा। यही लक्ष्य मनुष्यों के व्यक्तित्व को बनाता है।

a2zSubjects.com